Gyanvividha, Vol.-2; Issue-3 (July-Sept.) 2025 : PP-275-278

ज्ञानविविधा

कला, मानविकी और सामाजिक विज्ञान की सहकर्मी-समीक्षित, मूल्यांकित, त्रैमासिक शोध पत्रिका

ISSN : 3048-4537(Online)
3049-2327(Print)
IIFS Impact Factor-2.25
Vol.-2; Issue-3 (July-Sept.) 2025
Page No.- 275-278
©2025 Gyanvividha
https://journal.gyanvividha.com

डॉ. रेश्मा एम एल
सहायक आचार्य,
क्राइस्ट यूनिवर्सिटी,बंगलुरु.

Corresponding Author :

डॉ. रेश्मा एम एल
सहायक आचार्य,
क्राइस्ट यूनिवर्सिटी,बंगलुरु.

व्यंग्य कविता की भाषिक विशेषताएं

व्यंग्य कविता की अभिव्यक्ति के दो स्तर हैं- पहला है व्यंग्य का भाव और दूसरा है भाषा शैली। व्यंग्य के भाव तत्व के संबन्ध में पिछले अध्यायों में हम चर्चा हो चुकी है। भाषा का श्रेष्ठ रुप ही व्यंग्य को तीखा बनाता है। व्यंग्य कवि आम बोलचाल की भाषा के बदले दोहरे अर्थ को व्यंजित करने वाली भाषा का प्रयोग करते हैं। व्यंग्य कविता की भाषा साहित्यिक भाषा से दो कदम आगे है। व्यंग्यकार कथ्य को वैदग्ध्यपूर्ण ढंग से प्रस्तुत करने के कारण वह जल्दी ही पाठकों की संवेदनाओं को स्पर्श करता है। अभिधा के प्रयोग में भी तीखापन पैदा करने की क्षमता व्यंग्यकारों को है। व्यंग्य कविता में प्रयुक्त हरेक शब्द का अपना महत्व है। कुछ शब्दों में ही सही, गहरा प्रभाव उत्पन्न करने में व्यंग्यकार माहिर हैं। कभी-कभी व्यंग्य कविता में गाली गलौच देख सकते हैं। इसलिए व्यंग्य कविता की अपनी अलग विशेषताएँ हैं।

सबसे पहले व्यंग्य शब्द संस्कृत साहित्य में ही प्रयुक्त हुआ, लेकिन उस समय इसका प्रयोग आज के अर्थ में नहीं था। इसमें ध्वनि सिद्धांत के अंतर्गत व्यंग्य शब्द का प्रयोग किया गया है। प्रतीयमानार्थ को ही व्यंग्य कहते हैं, इसलिए 'साहित्य दर्पण' में कहा जाता है कि "व्यंजना शक्ति, शब्द और अर्थ की वह शक्ति है जो अभिधा आदि शक्तियों के शांत हो जाने पर एक ऐसे अर्थ का अवबोध कराती है जो वाच्य और लक्ष्य से भिन्न और विलक्षण होता है।"[1] भरत मुनि ने वाग्ड्मय का सर्वश्रेष्ठ रूप नाटक को मानकर काव्य के लक्षणों के बारे में इस प्रकार कहा है कि मृदु ललित पदावली, सर्वसुगम युक्तिमत्ता, नृत्य उपयोगिता, रस के अनेक स्त्रोत और संधि युक्ता तथा लक्षण पूर्णतया आदि काव्य के लक्षण हैं, लेकिन काव्य के ये लक्षण उन्होंने नाटक को ध्यान में रखकर ही कहा है। भामह के अनुसार शब्द और अर्थ के संयोग ही काव्य है। दंडी के अनुसार सुंदर अर्थ से विभूषित पद समूह ही काव्य

है। मम्मट ने काव्य में गुण अलंकार और रस को आवश्यक तत्व माना है। इन सब सिद्धांतों में चाहे रस हो अलंकार हो ध्वनि हो या वक्रोक्ति हो व्यंग्य का समावेश है।

साहित्य की सार्थकता उसके शिल्प पक्ष पर निर्भर है। कवि की संवेदनाओं को पाठकों के समक्ष अत्यंत रोचक ढंग से प्रस्तुत करना शिल्प पक्ष का कार्य है। शिल्प के लिए अंग्रेजी में construction, Design आदि शब्दों का प्रचलन है। सृजनात्मक कार्य में शिल्प द्वारा ही संपूर्ण सफल अभिव्यक्ति संभव है। संक्षेप में कहें तो शिल्प किसी न किसी संवेदना को पाठकों तक पहुँचाने का ज़रिया है। व्यंग्य में विसंगतियों को सीधे न कहकर घुमा फिराकर वैदग्ध्यपूर्ण ढंग से प्रस्तुत किया जाता है। ऐसे प्रस्तुतीकरण से पाठक वर्ग की रचना के प्रति नीरसता दूर हो जाती है। इसलिए व्यंग्य में शिल्प का खास महत्व है। अन्य साहित्यिक विधाओं की अपेक्षा व्यंग्य में बुद्धिगत मूल्यांकन का महत्व है, क्योंकि एक ही रचना के द्वारा व्यंग्यकार एकाधिक विसंगतियों पर व्यंग्य बाण चलाते हैं। व्यंग्य का शिल्प पक्ष अन्य विधाओं की तुलना में भिन्न है। व्यंग्य में जो तीखापन है, वह गाली का घोतक न होकर व्यंग्य के लिए धरोहर होता है। वक्रोक्ति, अतिशयोक्ति आदि का प्रयोग अन्य साहित्यिक विधाओं पर दोषारोपण लगने लगता है तो इन तत्वों के प्रयोग से व्यंग्य अपना अस्तित्व हासिल करता है। व्यंग्य में मुख्यत: लक्षणा शक्ति तथा व्यंजना शक्ति के प्रयोग हैं। माधुर्य, ओज, प्रसाद आदि का संयुक मिश्रण व्यंग्य के शिल्प पक्ष में देखने को मिलता है। अन्य विधाओं से व्यंग्य को श्रेष्ठ तथा लोकप्रिय बनानेवाले अनेक तत्व शिल्प पक्ष के अंतर्गत शामिल हैं।

व्यंग्य कविता के शिल्प पक्ष के अंतर्गत व्यंजनात्मक भाषा, प्रतीक, शैली, अलंकार आदि मुख्य रूप से आते हैं। आजकल कविता छंद और अलंकार के बंधन से मुक्त हो चुकी है। फिर भी जाने-अनजाने कहीं-कहीं कुछ अलंकारों का प्रयोग देखने को मिलते हैं। मुख्य रूप से विवरणात्मक शैली, विवेचनात्मक शैली, संवादात्मक शैली, प्रतीकात्मक शैली, चित्रात्मक शैली आदि शैलियों के साथ अग्रेज़ी, अरबी-फारसी शब्दों का प्रयोग भी व्यंग्य कविता में देखने को मिलता है। व्यंग्य विधा की विशेषता यह है कि सामाजिक विसंगतियों को वह अभिधा से न कहकर व्यंजना के माध्यम से ही कहती है। जिस प्रकार आत्मा और शरीर के योग से ही हमें अस्तित्व प्राप्त होता है, उसी प्रकार भाव और भाषा के योग से ही कविता को अपना अस्तित्व मिलता है। साहित्यिक शैली मुख्य रूप से दो तत्वों पर आश्रित हैं। पहला लेखक की संवेदनात्मक चेतना है तो दूसरी भाषिक संरचना है। इन दोनों के संयोग से ही एक सार्थक रचना संभव है। आज के कवियों ने व्यंग्य के शिल्प को साधन के रूप में प्रयुक्त करके व्यंग्य कविता को सशक्त बनाया है। व्यंग्य को स्तरीय बनाने के लिए व्यंग्यकारों ने अनेक शैलियों को अपनाया है। इसलिए व्यंग्य कविता को लोकप्रिय बनाने में भावपक्ष के साथ-साथ शिल्प पक्ष का भी अपना महत्व है। अन्य साहित्यिक विधाओं में प्रयुक्त भाषा तथा व्यंग्य विधा की भाषा में समानता-असमानता संबंधी बहस व्यंग्य आलोचकों के बीच चल रही है।

व्यंग्य सृजन के दौरान व्यंग्यकार को साधारण भाषा से ज़्यादा तीखापन और अर्थ को अभिव्यक्त करनेवाली भाषा को अपनाना चाहिए। सभी साहित्यिक विधाओं को अलग-अलग भाषिक संरचनाएँ हैं। साहित्यिक भाषा और व्यंग्य भाषा में फर्क है, क्योंकि साहित्य की अन्य विधाओं से व्यंग्य एकदम भिन्न है। इसका मतलब यह नहीं है कि व्यंग्य की भाषा अतिसामयिक होनी चाहिए, क्योंकि व्यंग्य साधारण जनता के लिए है, सरल शब्दों का प्रयोग करना भी बेहद ज़रूरी है। इसके बीच संतुलन करके ही व्यंग्यकार को लिखना चाहिए। डॉ उदयनारायण तिवारी ने 'व्यंग्य और समाज' लेख में व्यंग्य अभिव्यक्ति के बारे में इस प्रकार कहा है- "व्यंग्यकार अपनी अभिव्यक्ति में कितनी धारधार संयोजन करता है, वह अपनी भाषा पर कितना अधिकार रखता है, कितनी सहजतापूर्वक पाठकों की सहानुभूति पा लेता है, आदि ऐसे प्रश्न हैं, जो उसके सामर्थ्य के घोतक हैं।"[2] साहित्यिक भाषा और व्यंग्य भाषा में भेद विषय पर व्यंग्यालोचकों ने अपनी-अपनी राय प्रकट कर दी है ।

साहित्य भाषा और व्यंग्य की भाषा के बीच के अंतर को व्यक्त करते हुए व्यंग्यालोचक डॉ श्यामसुंदर घोष ने लिखा है- "व्यंग्य लेखक के भाषा

संबधी आदर्श सामान्य लेखकों की भाषा संबंधी आदर्श से निश्चय ही भिन्न होंगे। जैसे नाई हजामत बनाने के पहले अपने अस्तुरे को तेज़ करता है और ऊँगली पर धार की परख भी कर लेता है, उसी प्रकार व्यंग्य लेखक को अपनी भाषा की जाँच कर लेनी चाहिए। व्यंग्य लेखक की भाषा में धार और नोंक दोनों की ज़रूरत हैं। कभी वह नश्तर लगता है कभी खंजर चुभोता है। यदि उसकी भाषा एकरस और एक ढंग की होगी तो वह यह काम बखूबी नहीं कर सकता।"[3] व्यंग्य भाषा और साहित्यिक भाषा को समान मानने वालों में प्रभाकर माचवे और अमृत राय का स्थान महत्वपूर्ण हैं। प्रभाकर माचवे के अनुसार- "साहित्य की भाषा व्यवहार की भाषा से कोई अलग नहीं होती। व्यंग्य, साहित्य की ही एक विधा है जैसा साहित्य होता वैसा ही उसके व्यंग्य के स्तर होंगे। कुछ बड़े व्यंग्यकारों ने भाषा को कई नए शब्द दिए हैं।"[4] सपाटबयानी के माध्यम से ही व्यंग्य रचना संभव है। सपाटबयान होते हुए भी व्यंग्य भाषा में तीखापन होना ज़रूरी है। व्यंग्य भाषा में तीखापन, प्रतीकात्मकता, सांकेतिकता, ध्वन्यात्मकता आदि का होना ज़रूरी है। इसका मतलब यह नहीं है कि व्यंग्य की भाषा में बनावटीपन और नखरैलापन नहीं है। वह व्यंग्यकार के विचारों को प्रकट करता है, इसलिए असहज प्रयोगों की ज़रूरत भी नहीं है।

व्यंग्य भाषा की संरचना में प्रतीकात्मक शैली का स्थान सर्वोपरि है। प्रतीक को अंग्रेज़ी में Symbol यानी चिह्न कहते हैं। किसी मूर्त वस्तु के द्वारा अमूर्त की पहचान देने के लिए कविता में प्रतीक का प्रयोग करते हैं। व्यंग्याभिव्यक्ति को अधिक तीखा बनाने में प्रतीकात्मक शैली का स्थान महत्वपूर्ण है।

जलप्रदूषण को लेकर लिखित अनिता राकेश की एक कविता है 'सोचो जरा'।

"गंगा सूखकर छोटी हो गई है
क्योंकि गंदगी फैलकर बड़ी हो गई है!
गुलाब की जड़ों में कुछ जंगली शूट निकल आए हैं।
अब उनके रक्षक कांटे ही उनको बींध रहे हैं।"5

प्रस्तुत कविता में जंगली शूट और रक्षक काँटे आदि प्रतीक हैं। इस कविता में प्रत्यक्ष जगत अप्रत्यक्ष जगत की भावनाओं के प्रतीक बनकर सामने आए हैं। प्रतीक के माध्यम से अर्थ को सपाटबयानी से कहने के बजाय सांकेतिक ढंग में अर्थ की अभिव्यक्ति करते हैं। प्रतीकात्मक व्यंग्य कविता कभी भी अभिधापरक नहीं होगी। इसके फलस्वरूप व्यंग्य कविता में अर्थ की व्यापकता, गंभीरता, प्रौढ़ता और बहुआयामी प्रहारात्मकता की संभावना होती है। इससे कविता की आभा और पैनापन बढ़ते ज़रूर हैं।

कहा जाता है कि एक चित्र हज़ारों शब्दों से ज़्यादा सशक्त है। व्यंग्यकारों ने शब्दों के ज़रिए पाठकों के सम्मुख चित्र खींचने का कार्य बखूबी से निभाया है। चित्रात्मक भाषा के ज़रिए विसंगतियों, परिस्थितियों और यथार्थता का विचार संचारित कर सकता है। भाषा में चित्रात्मकता का गुण होना व्यंग्यकार की अद्भुत प्रतिभा की मिसाल है। चित्रात्मकता का समावेश व्यंग्य कविता को अधिक चुटीला बनाता है। आदर्श व्यंग्यकार शब्द शिल्पी हैं। विष्णु नागर की 'कुत्ते बिल्ली' नामक कविता में कवि पति-पत्नि के बीच की लड़ाई को व्यंग्यात्मक रवैये के साथ प्रस्तुत करते हैं। एक ही घर व मालिक के कुत्ते और बिल्ली चिर वैरी होते हैं। इसी प्रकार प्रस्तुत पंक्तियाँ पढ़ते वक्त हमारे मन में हमेशा शत्रु की भांति लड़ते पति-पत्नी का चित्र आसानी से आता है।

विवरणात्मक शैली के अंतर्गत किसी न किसी परिस्थिति, विसंगति, घटना, व्यक्ति, स्थान आदि का क्रमबद्ध विस्तार विद्यमान है। इस शैली में कवि निष्पक्ष होकर घटनाओं का विवरण देता है। मुख्य रुप से विवरणत्मक शैली के दो भेद हैं- प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष। व्यंग्य कविता में इन दोनों शैलियों का प्रयोग है। इस शैली को अपनाकर लिखी गई कविताओं की भाषा सरल, सुबोध, सुस्पष्ट तथा तथ्यपरक विचारों से ओतप्रोत है।

कात्यायनी की 'आखेट' नामक कविता में आलोचना जगत की विसंगतियों के पोल खोलने के लिए विवरणात्मक शैली को अपनाया गया है। आजकल के आलोचक ने एक कृति की आलोचना करने के लिए आखेट शब्द का प्रयोग किया है। कवि ने आलोचना की इस प्रक्रिया को यानी आखेट को विवरणात्मक ढंग से बयान किया है।

"अजब-ग़जब से शस्त्र संभाले थाम कलम की भेंट
आलोचक जी करने निकले कविता का आखेट।
शब्दों का सागर मथ डाला सब-कुछ डाला फेंट

भाँति-भाँति के अर्थों से करवाई दुर्लभ भेंट।
इष्ट साधकर महामहिम ने बस्ता लिया समेट
जो कुछ कवि ने किया-धरा था सब-कुछ मटियामेट।"[6]

विचारात्मक शैली में विचारों की प्रधानता है। इस शैली में लिखित व्यंग्य कविताओं में कवि किसी न किसी विसंगति का मूल्यांकन, व्याख्या, विवरण न करके तर्कपूर्ण विश्लेषण करते हैं। इसमें बुद्धि तत्व की भूमिका महत्वपूर्ण है, इसलिए विचारात्मक शैली में रचित व्यंग्य कविताएँ अधिक सार्थक हैं। विष्णु नागर की 'एडजस्टमेण्ट' नामक कविता में कवि ने एडजस्टमेण्ट के जमाने में जीनेवाले लोगों पर व्यंग्य करते हुए चुभते हुए शब्दों के साथ लिखा है कि आजकल चारों ओर एडजस्टमेण्ट का बोलबाला है। कवि ने यों लिखा-

"एडजस्टमेण्ट करना सेल्फ़ी लेने जितना आसान है
एडजस्टमेण्ट हर शहर का महात्मा गाँधी मार्ग है
एडजस्टमेण्ट कण्डोम के समान है
जिसे पहनकर अपने को ब्रहमचारी सिद्ध करना आसान है
एडजस्टमेण्ट 2002 के बाद का
सत्य है, शिव है, सुन्दर है
एडजस्टमेण्ट का पुरस्कार मिलकर रहता है
भारत माँ के सच्चे पुत्र होने का सौभाग्य मिलता है
और कुछ हो न हो मगर देश का विकास होकर रहता है
अरे विकास, विनाश नहीं, विकास।"[7]

इक्कीसवीं सदी की व्यंग्यकारों ने भी व्यंग्य कविता को ज़्यादा आक्रोशात्मक और प्रभावपूर्ण बनाने के लिए कथोपकथन का इस्तेमाल किया गया है, लेकिन बहुत सावधानी से संतुलित ढंग से कथोपकथन का प्रयोग व्यंग्यकारों ने किया है। कविता में आंतरिक अनुभूतियों और मनोव्यापारों का खुलासा करने के लिए मात्रा और औचित्य को ध्यान में रखकर व्यंग्यकारों ने संवाद का सहारा लिया है।

अशोक पारुथी मतवाला द्वारा लिखित व्यंग्य कविता है 'तरक्की' जो संवाद शैली की है। इसमें एक मंत्री से जनता का वार्तालाप दिखाया गया है। संवादात्मक शैली के माध्यम से ही कवि ने नेता वर्ग की कुटिलता को दिखाया है।

"जनता ने मंत्री महोदय से पूछा
'आपके आश्वासनों के सिवा क्या हुई है तरक्की ?'
तो जवाब में मंत्री जी मुस्कुराए और बोले-'क्यों, नहीं, क्यों नहीं।
मेरे मंत्री बनने के बाद हुई है काफी प्रगति
आम के पौधे, पेड़ हो गए गली के पिल्ले शेर हो गए हैं।"[8]

व्यंग्य कविता की भाषिक संरचना अन्य साहित्यिक विधाओं से अधिक वैदग्ध्यपूर्ण है। बहुत कम शब्दों में अधिक कहने की ताकत व्यंग्य भाषा में होना, स्तरीय व्यंग्य का लक्षण है। प्रतीकात्मकता, चित्रात्मकता, विभिन्न अलंकारों का प्रयोग, मानवीकरण आदि के साथ-साथ वचनवक्रता, वाग्वैदग्ध्य आदि भी व्यंग्य भाषा में होना परम आवश्यक है। व्यंग्य कविता को अभिव्यक्ति के नए सोपानों की ओर लाने के लिए भाषा की भूमिका महत्वपूर्ण है। एक सर्वसाधारण शब्द के भीतर भी अनेकार्थ छिपाने की ताकत कुशल व्यंग्यकारों की निपुणता की मिसाल है। लोकोक्तियों और मुहावरों के प्रयोग के साथ-साथ कभी-कभी गालियों का प्रयोग भी व्यंग्य कविता में देखने को मिलते हैं, लेकिन व्यंग्य गाली-गलौज नहीं है। व्यंग्य की भाषा में सजीवता, प्रवाह तथा प्रभावोत्पादकता लाने केलिए संवादों या कथोपकथन के साथ-साथ मानवीकरण का इस्तेमाल भी किया गया है। नीरस या ऊबे हुए विषयवस्तुओं में भी सरसता के प्रयोग के कारण व्यंग्य भाषा लुभावनी हो जाती है।

संदर्भ ग्रंथसूची :

1. आचार्य विश्वनाथ – साहित्य दर्पण – पृ.- 111.
2. नरेंद्र कोहली-आधुनिक लड़की की पीड़ा–पृ.- 55.
3. सं – डॉ श्याम सुंदर घोष -व्यंग्य क्या, व्यंग्य क्यों – पृ.-119.
4. सं – डॉ श्याम सुंदर घोष -व्यंग्य क्या, व्यंग्य क्यों –पृ.-145.
5. अनीता राकेश -जलते प्रश्न – पृ.-41.
6. कात्यायनी – कात्यायनी की प्रतिनिधि कविताएँ- कविताकोश.
7. कात्यायनी – कात्यायनी की प्रतिनिधि कविताएँ- कविताकोश.
8. साहित्य कुंज वेबसाईट.

•